सूरह — एक कहानी

सूरह अल-जिन्न

जिन्न

पूरा सफ़र — वो रात जब ग़ैब की दुनिया ने सुना —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 72 • 28 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

कुल ऊहिय इलय्य अन्नहुस्-तम'अ नफ़रुम्-मिनल्-जिन्न
1. कहिए: मुझे वही की गई कि जिन्नों की एक जमाअत ने सुना।

इन्ना समि'ना क़ुरआनन 'अजबा। यह्दी इलर्-रुश्द
1-2. बेशक हमने एक अजीब क़ुरआन सुना, जो भलाई की राह दिखाता है।

व अन्ना मिन्नस्-सालिहून व मिन्ना दून ज़ालिक
11. और हम में कुछ नेक हैं और कुछ इसके अलावा।

व अन्नल्-मसाजिद लिल्लाहि फ़-ला तद'ऊ म'अल्लाहि अहदा
18. और मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं, तो अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।

क़ुल इन्नमा अद'ऊ रब्बी व ला उश्रिकु बिही अहदा
20. कहिए: मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूँ और किसी को शरीक नहीं करता।

व अह्सा कुल्ल शै-इन 'अददा
28. और उसने हर चीज़ का शुमार गिन रखा है।

वो रात जब कोई सुन नहीं रहा था

बेटा, इस सूरह को समझने के लिए आपको पहले नबी ﷺ के साथ उनके मिशन के सबसे नीचे नुक़्ते पर खड़ा होना होगा।

मक्का में दस साल की तबलीग़ ने गालियाँ, बायकॉट, और एक ही साल-ए-ग़म में उनकी महबूब बीवी ख़दीजा (रज़ि0) और उनके चचा अबू तालिब का इंतिक़ाल ला दिया था। तो आप ﷺ पैदल, ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि0) के साथ, ता'इफ़ के शहर चले — इस उम्मीद में कि उसके लोग शायद ये पैग़ाम उठाएँ। उन्होंने आपको रद्द किया, मज़ाक़ उड़ाया, और अपने गली के बच्चों को आप पर लगा दिया, जिन्होंने पत्थर बरसाए यहाँ तक कि ख़ून आपकी मुबारक जूतियों में उतर आया।

वापसी पर, जिस्म और दिल से टूटे हुए, आप ﷺ नख़्लह नाम की जगह पर रुके। और वहाँ, रात की गहराई में, आप नमाज़ में खड़े हुए और अपने रब के सामने क़ुरआन पढ़ा

— ज़ाहिरन एक ख़ाली वादी में अकेले, जब एक भी इंसान सुन नहीं रहा था।

मगर आप अकेले न थे, बेटा। **जिन्नों** का एक क़ाफ़िला गुज़रा, और तिलावत ने उन्हें जकड़ लिया। वो खड़े हो गए, ख़ामोश, सुनते हुए — और जब वो ख़त्म हुई तो वो अपनी क़ौम की तरफ़ तंबीह करने वालों के तौर पर जल्दी लौट गए।

बेटा, इस तज़ाद को बाक़ी ज़िंदगी थाम लीजिए: उसी सफ़र पर, ता'इफ़ वालों ने पढ़ने वाले पर पत्थर फेंके — जब कि एक पूरी ग़ैब की दुनिया ने ख़ुद को ईमान में झोंक दिया। जब लगता था कि कोई सुन नहीं रहा, अल्लाह ने एक ऐसा मजमा तैयार कर रखा था जिसे नबी ﷺ देख भी नहीं सकते थे। तो अपनी नेक मेहनत की क़ीमत कभी अपने सामने के चेहरों से मत नापिए। पढ़िए, सिखाइए, दीजिए, नमाज़ पढ़िए — और मजमा अल्लाह पर छोड़ दीजिए।

उनके अपने अल्फ़ाज़, हमेशा के लिए दर्ज

और अब, बेटा, इस सूरह की एक अनोखी बात ग़ौर कीजिए: आयत 1 से आयत 15 तक, अल्लाह जिन्नों का बयान नहीं करते — वो उन्हें **नक़ल** करते हैं। उनकी अपनी गवाही, क़ुरआन में हमेशा के लिए महफ़ूज़।

'क़ुल ऊहिय इलय्य अन्नहुस्-तम'अ नफ़रुम्-मिनल्-जिन्न — कहिए: मुझे वही की गई कि जिन्नों की एक जमाअत ने सुना — फ़-क़ालू इन्ना समि'ना क़ुरआनन 'अजबा — और उन्होंने कहा: बेशक हमने एक अजीब क़ुरआन सुना — यह्दी इलर्-रुश्द — जो भलाई की राह दिखाता है — फ़-आमन्ना बिह — तो हम इस पर ईमान ले आए — व लन नुश्रिक बि-रब्बिना अहदा — और हम अपने रब के साथ कभी किसी को शरीक नहीं करेंगे।'

बेटा, उनके सफ़र की रफ़्तार देखिए: उन्होंने सुना, पहचाना, ईमान लाए, और फ़ौरन तौहीद का एलान किया — सब दो आयतों में। जब कि मक्का के सरदार वही क़ुरआन दस साल से सुन रहे थे, अपनी ही ज़ुबान में, एक ऐसे शख़्स से जिसे वो अल-अमीन कहते थे — और अब भी बहस ही कर रहे थे। हिदायत इस बात पर नहीं कि आप कितना सुनते हैं, बेटा; इस बात पर है कि आप कितनी ईमानदारी से सुनते हैं।

और ग़ौर कीजिए उन्हें किस चीज़ ने मुतअस्सिर किया: 'क़ुरआनन 'अजबा' — एक अजीब तिलावत। फिर: 'यह्दी इलर्-रुश्द' — ये उस चीज़ की तरफ़ राह दिखाता है जो सही और पुख़्ता है। पहले हुस्न ने उनके कान पर चोट की; फिर हिदायत ने उनके दिल पर।

फिर उन्होंने अपना नया अक़ीदा बयान किया, अपनी ही क़ौम के अक़ाइद की तसहीह करते हुए: 'और हमारे रब की शान बुलंद है — उसने न कोई बीवी बनाई न बेटा। और ये कि हम में से बेवक़ूफ़ लोग अल्लाह के बारे में हद से बढ़ी हुई बात कहा करते थे।' बेटा, उनकी ईमानदारी महसूस कीजिए: उन्होंने माना कि वो ख़ुद गुमराह किए जा चुके थे, और अपने पुराने अक़ीदे को बेवक़ूफ़ी का नाम दिया।

जिन्नों के बारे में सच

बेटा, ये सूरह उम्मत की उस दुनिया में सबसे क़ाबिल-ए-ए'तिमाद खिड़की है जिसे लोग तवह्हुम-परस्ती से भर देते हैं — तो आइए उनकी अपनी गवाहियाँ ग़ौर से पढ़ें।

पहली, वो सब बुरे नहीं: 'व अन्ना मिन्नस्-सालिहून व मिन्ना दून ज़ालिक — और हम में कुछ नेक हैं, और कुछ इस के अलावा — कुन्ना तराइक़ क़िददा — हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं।' बिल्कुल इंसानों की तरह, बेटा: मोमिन और मुनकिर, अच्छे और बुरे। वो एक ऐसी मख़्लूक़ हैं जिन्हें आज़ाद इरादा और जवाब-देही है, कोई भूत-प्रेत की नस्ल नहीं।

दूसरी, वो अपनी हदें जानते हैं: 'व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन नु'जिज़ल्लाह फ़िल्-अर्ज़ि व लन नु'जिज़हू हरबा — और हमें यक़ीन हो गया कि हम ज़मीन में अल्लाह को कभी आजिज़ नहीं कर सकते, न भाग कर उन से बच सकते हैं।' सबसे ताक़तवर जिन्न भी अल्लाह से आगे नहीं भाग सकता — तो फिर मोमिन उनसे क्यों डरे?

तीसरी — और ये अहम है, बेटा — आसमान मुहर-बंद कर दिया गया: 'व अन्ना लमस्नस्-समा-अ फ़-वजद्नाहा मुलि-अत हरसन शदीदंव्-व शुहुबा — और हमने आसमान को छूना चाहा, मगर उसे सख़्त पहरों और जलते शोलों से भरा पाया। फ़-मंय्-यस्तमि'इल्-आन यजिद लहू शिहाबर्-रसदा — मगर जो अब सुनेगा वो अपने

लिए एक जलता शोला घात में पाएगा।'

बेटा, ये एक पूरे कारोबार की वज़ाहत कर देता है। आख़िरी वही से पहले, कुछ जिन्न आसमानों के किनारों पर छुप कर सुनते, फ़रिश्तों की गुफ़्तगू का एक टुकड़ा पकड़ते, और अपने इंसानी राब्तों — काहिनों — को दे देते, जो उस एक चुराए हुए लफ़्ज़ को सौ झूटों के साथ मिला देते। नबी ﷺ के आने के साथ, वो तार **काट** दिया गया। और सूरह की आगे वाली आयत दरवाज़ा मुकम्मल बंद कर देती है: "आलिमुल्-ग़ैबि फ़-ला युज़्हिरु 'अला ग़ैबिही अहदा — वो ग़ैब के जानने वाले हैं, और अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करते — इल्ला मनिर्-तज़ा मिर्-रसूल — सिवाए उस रसूल के जिसे वो पसंद फ़रमाएँ।'

तो, बेटा: कोई हाथ देखने वाला, कोई अदद-शनास, कोई 'जिन्न-वाला बाबा', कोई ज़ाइचा कॉलम आपके मुस्तक़बिल तक कोई रसाई नहीं रखता। हर ऐसा दावा इल्म के भेस में एक अंदाज़ा है। और नबी ﷺ ने ख़बरदार किया कि जो किसी ग़ैब-दान के पास जाए और उसकी बात का यक़ीन कर ले, उसने उस चीज़ का इनकार किया जो मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल हुई।

चौथी, उन्होंने एक इंसानी ग़लती बे-नक़ाब की: 'व अन्नहू कान रिजालुम्-मिनल्-इंसि य'ऊज़ून बि-रिजालिम्-मिनल्-जिन्नि फ़-ज़ादूहुम रहक़ा — और इंसानों में से कुछ मर्द जिन्नों में से कुछ मर्दों की पनाह माँगा करते थे, तो उन्होंने उन्हें सिर्फ़ बोझ में बढ़ा दिया।' बेटा, पुराने ज़माने में लोग किसी ख़ौफ़नाक वादी से गुज़रते हुए पुकारते: 'मैं इस वादी के सरदार की पनाह माँगता हूँ!' और उसका नतीजा क्या निकला? जिन्नों में तकब्बुर, और इंसानों में ज़्यादा ख़ौफ़ और बोझ। वही कारोबार आज नए नामों के साथ जारी है। इलाज एक लाइन है: सिर्फ़ **अल्लाह** की पनाह माँगिए — 'अ'ऊज़ु बिल्लाह', और हर सुबह-शाम मु'अव्विज़तैन।

मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं

और अब, बेटा, इस सूरह का मरकज़ी सुतून — एक लाइन जो हमेशा के लिए हर इबादत की सिम्त तय कर देती है: 'व अन्नल्-मसाजिद लिल्लाहि फ़-ला तद'ऊ

म'अल्लाहि अहदा — और सजदे की जगहें अल्लाह के लिए हैं, तो अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।'

'मसाजिद' का मतलब इबादत की जगहें हो सकता है, और उलमा सजदे के आ'ज़ा का भी ज़िक्र करते हैं — पेशानी, हाथ, घुटने, पाँव। दोनों सूरतों में पैग़ाम यकसाँ है: जो चीज़ सजदे के लिए इस्तेमाल हो वो अकेले अल्लाह की है, और उसके साथ कोई नाम नहीं पुकारा जा सकता।

और फिर नबी ﷺ को अपने बारे में क्या कहने का हुक्म दिया गया, बेटा — और इसमें ग़ौर कीजिए कि किस लफ़्ज़ से उनकी पहचान बताई गई: 'व अन्नहू लम्मा क़ाम 'अब्दुल्लाहि यद'ऊहु कादू यकूनून 'अलैहि लिबदा — और जब **अल्लाह का बंदा** उसे पुकारने खड़ा हुआ तो वो (जिन्न) क़रीब था कि उस पर टूट पड़ें (भीड़ बन कर)।'

बेटा, इंसान का सबसे बुलंद दर्जा यही है: 'अब्दुल्लाह — अल्लाह का बंदा। इसी लक़ब से इसरा की रात में भी उन्हें पुकारा गया।

'क़ुल इन्नमा अद'ऊ रब्बी व ला उश्रिकु बिही अहदा — कहिए: मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। क़ुल इन्नी ला अम्लिकु लकुम ज़र्रंव्-व ला रशदा — कहिए: मैं तुम्हारे लिए न किसी नुक़सान का मालिक हूँ न भलाई का।'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। मख़्लूक़ में सबसे अज़ीम शख़्स को हुक्म दिया गया कि खुले-आम एलान करें: मैं तुम्हारे लिए नुक़सान या हिदायत का मालिक नहीं। अगर वो नहीं, तो फिर कोई भी नहीं। हर दुआ सीधे उसी दरवाज़े पर जाती है।

महफ़ूज़ पैग़ाम

सूरह इस बयान पर ख़त्म होती है कि वही की हिफ़ाज़त कैसे की जाती है: 'इल्ला मनिर्-तज़ा मिर्-रसूलिन फ़-इन्नहू यस्लुकु मिम्-बैनि यदैहि व मिन ख़ल्फ़िही रसदा — सिवाए उस रसूल के जिसे वो पसंद फ़रमाएँ — तो बेशक वो उसके आगे और पीछे पहरेदार चलाते हैं — लि-य'अ्लम अन क़द अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम — ताकि

वो ज़ाहिर कर दें कि उन्होंने अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए। व अहात बिमा लदैहिम व अह्सा कुल्ल शै-इन 'अददा — और उसने उन के पास जो कुछ है उसे घेर रखा है, और हर चीज़ का शुमार गिन रखा है।'

बेटा, ये है क़ुरआन के गिर्द का हिफ़ाज़ती निज़ाम: आगे और पीछे फ़रिश्तों के पहरेदार, ताकि एक लफ़्ज़ भी आसमान और रसूल की ज़ुबान के दरमियान पकड़ा, बदला या खोया न जा सके। और आख़िरी जुमला — 'उसने हर चीज़ का शुमार गिन रखा है' — पूरी सूरह पर मुहर है: वो रब जो हर ज़र्रा गिनता है, आपको, आपके अमल को, या आपके मुक़दमे को कभी नज़र-अंदाज़ नहीं करेगा।

और एक आख़िरी आजिज़ी का सबक़, बेटा: नबी ﷺ को हुक्म है कि ख़ुद उस दिन के बारे में कहें: 'क़ुल इन अद्री अ-क़रीबुम्-मा तू'अदून अम यज्'अलु लहू रब्बी अमदा — कहिए: मैं नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा है वो क़रीब है, या मेरे रब उसके लिए एक लंबी मुद्दत मुक़र्रर करेंगे।' जिसे वही मिली वो भी उस घड़ी का इल्म नहीं जानता था। तो जब आज कोई ग़ैब का दावा करे — कोई तारीख़, कोई क़िस्मत, कोई पोशीदा राज़ — तो आप ठीक ठीक जानते हैं कि क्या समझना है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. मुख़्लिस हो कर पढ़िए और काम कीजिए चाहे कोई सुनता न लगे — अल्लाह ऐसे मजमे तैयार करते हैं जिन्हें आप देख नहीं सकते।

2. हिदायत ईमानदार सुनने पर मौक़ूफ़ है, इस पर नहीं कि आप कितना सुनते हैं — जिन्न दो आयतों में ईमान लाए; मक्का दस साल बहस करता रहा।

3. जिन्नों का ख़ौफ़ तौहीद से दूर होता है, तावीज़ों और 'बाबाओं' से नहीं — मख़्लूक़ की पनाह माँगना सिर्फ़ बोझ बढ़ाता है।

4. कोई मख़्लूक़ मुस्तक़बिल नहीं जानती: ग़ैब-दानों वाला तार काट दिया गया।

5. 'मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं' — हर सजदा, दुआ और इल्तिजा सिर्फ़ उसी के लिए है, बग़ैर किसी शरीक और बग़ैर किसी वास्ता-दार के।

6. इंसान का सबसे बुलंद दर्जा 'अब्दुल्लाह है — और हमारे नबी ﷺ तक किसी के लिए न नुक़सान के मालिक हैं न हिदायत के।

7. क़ुरआन आगे-पीछे पहरों में आया — इस पर मुकम्मल भरोसा कीजिए, और ग़ैब के अपने अक़ाइद सिर्फ़ इसी किताब पर खड़ा कीजिए।

या अल्लाह, हमारी तिलावत को उन दिलों तक पहुँचाइए जिन्हें हम देख नहीं सकते, हमारी इबादत को ख़ालिस अपने लिए रखिए, और हमें हर पोशीदा नुक़सान से बचाइए। आमीन।